–: श्रीसीताराम स्तवराज :–

॥ श्रीशंभुरुवाच ॥

ॐ रामाय परमेशाय सीतायै प्रभवात्मने । केवलायाऽद्वितीयायै परायै परमात्मने ॥१॥

Scanned by CamScanner

नमो नित्याय भद्रायै रघुवंश विवर्द्धने । निमिवंश यशः कीर्ति प्रभायै भूतभावने ॥२॥
आनन्दकन्दरूपायै प्रज्ञायै परमात्मने । नमोऽस्तु गुरवे तुभ्यं मूलकन्दाय जिष्णवे ॥३॥
तत्त्व पद्मविकाशायै संविन्नात्मकाय च । प्रकृति त्रय रूपाय विकार केशरात्मने ॥४॥
विद्यातत्त्व विभाविन्त्यै परतत्त्व स्वरूपिणे । आकाशगुण भिन्नायै जानकै राघवाय च ॥५॥
स्पर्शरूपा भवेत्सीता रूपार्णवो भवान्हरिः । रसरूपा तथा ज्ञेया गन्धदृग् पुरुषोभवान् ॥६॥
ब्रह्मात्वं हि जगद्धाता विश्वधात्री नृपात्मजा । त्वं विष्णुरप्रमेयात्मा रमा सीता प्रकीर्तिता ॥७॥
भवान्महेश्वरो नाथ सीता गौरी भवेत्पुनः । आद्या सा प्रकृतिस्सीता आद्यस्तु पुरुषोत्तमः ॥८॥
गुणातीतो भवान्नित्यो नित्यभूता सनातनी । प्रकृते र्गुणसंभिन्नः सीता प्रकृतिमातृका ॥९॥
जलशायी महाविष्णुर्भवान् देव जनेश्वरः । अहंलिङ्ग महाशंभु र्भवान्ह्याद्यो गुणेश्वरः ॥१०॥
गुणातीता भवेत्सीता महामाया गुणेश्वरी । मात्रारूपी तथा सीता पञ्चभूतात्मको भवान् ॥११॥
महातत्त्व निरूपाधि विभूतिरनपायिनी । अहं तत्त्वो विमुक्तात्मा निर्विकारो भवान् हि सः ॥१२॥
विश्वाधारो जगन्नाथो भगवान् विश्वभुक्प्रभुः । सीताशक्ति रसोत्पत्ति राधारशक्तिरुत्तमा ॥१३॥
दृश्यादृश्य जगत्कृत्स्नं त्वयाराम प्रतिष्ठितम् । तद्भावना भूतेस्वामिन् न केञ्चित्यत्प्रतेष्ठति॥१४॥
जननी जानकीत्वं हि जनकोऽखिलार्ति हा । कृपां कुरुजगत्स्वामिन् दासोऽहमितिभावय ॥१५॥

श्रीरामोवाच—

वरंवृणिष्व भद्रं ते अहं वत्स वरप्रदः । पुनर्विभाव्यं दुराराध्यं दास्यामि तव सुव्रत ॥१६॥
अनेन स्तवराजेन यः स्तोष्यति सदा नरः । तस्यहृदि सदावासः करिष्यामि न संशयः ॥१७॥
ब्रह्महत्यादि पापेभ्यो विमुक्तात्मा भविष्यति । असिद्धोलभतेसिद्धिं ब्रह्मनिर्वाण गृच्छति ॥१८॥
विद्याहीनो लभेद्विद्यां ममाक्षर विचिन्तनात् । युद्धे जयमवाप्नोति वादीषुविजयी भवेत् ॥१९॥
अगतिः कुगतिर्भ्रष्टो हेतुवादी ह्यचेतनः । पठनाच्छ्रवणान्नित्यं मम लोके महीयते ॥२०॥

॥ श्रीशिव उवाच ॥

इयं हि प्रार्थनाराम श्रूयतां यदि रोचते । दीयतां मम देवेशत्वयि भक्ति र्दृढास्तिमे ॥२०॥

॥ इति श्रीमहासुन्दरी तंत्रे परम रहस्ये ॥

श्रीसीताराम स्तवराजः सम्पूर्णः

॥ श्रीसीतारामस्तवराजः ॥

श्री शङ्कर जी बोले—

ॐ श्रीराम को परमेश को, श्रीसीताजी को प्रभवात्मा को-केवल अद्वितीया को परमात्मा को-परात्परा को नमस्कार है ॥ १ ॥ नित्य को-भद्रस्वरूपा को-रघुवंश की वृद्धि करने वाले को-निमिवंश की यश-कीर्ति की प्रभा को तथा भूत भावन को ॥ २ ॥ आनन्द कन्द स्वरूपा को-प्रज्ञा को परमात्मा को-गुरु स्वरूप आपको नमस्कार है, जगत् के मूलकन्द सबको जीतने वाले तत्त्व पद्म को विकसित करने वाली को, संविद् आत्मात्मक प्रकृति त्रय स्वरूप विकार केशरात्मक ॥ ४ ॥ आकाश गुण से भिन्न श्री जानकी जी को श्रीराघव को विद्या तत्व का प्रकाश करने वाली तथा परतत्व स्वरूप आपको नमस्कार है ॥ ५ ॥ स्पर्श रूपा श्री सीता है तो हे हरि आप रूप के सागर है, रस रूपा श्री जानकी जी हैं तो आप गन्ध को देखने वाले पुरुष हैं ॥ ६ ॥ जगत् के धाता आप ब्रह्मा हैं तो श्री राजकुमारी जी विश्व की धात्री हैं । आप अप्रमेयात्मा विष्णु हैं तो श्री सीता साक्षात् रमा कही गयी है ॥ ७ ॥ हे नाथ ! आप महेश्वर हैं । ये सीता गौरी हैं । आद्या प्रकृति श्रीसीता हैं तो आप आद्य पुरुषोत्तम है ॥ ८ ॥ आप गुणातीत नित्य स्वरूप हैं तो श्री सीता नित्या सनातनी हैं । आप प्रकृति के गुणों से भिन्न हैं तो सीता प्रकृति की मातृका है ॥ ९ ॥ आप जलशायी महाविष्णु सर्व देवों के ईश्वर हैं, हम महाशम्भु आपके ही चिह्न हैं, आप आद्य पुरुष गुणेश्वर है ॥ १० ॥ तो श्री सीता गुणातीता महामाया-गुणेश्वरी है । माया स्वरूपिणी सीताजी हैं तो आप पञ्च महाभूतात्मक हैं । ११॥ निरुपाधि महातत्व अनपायिनी शक्ति श्री सीताजी की विभूति है; तो आप अहं तत्व से विमुक्तात्मा निर्विकार स्वयं ब्रह्म हैं ॥ १२ ॥ विश्व के आधार जगत् के नाथ विश्व के भोक्ता आप भगवान हैं तो श्री सीता जी विश्व आधार शक्ति परमोत्तमा रसोत्पत्ति करने वाली हैं ॥ १३ ॥ यह दृश्य तथा अदृश्य सम्पूर्ण जगत् हे राम ! आप में ही प्रतिष्ठित है, आपकी भावना से रहित ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जो यहाँ देखने को मिलती हो ॥ १४ ॥ इस जगत् की जननी श्री जानकी जी हैं तथा सम्पूर्ण आपदाओं का हरण करने वाले पिता आप हैं । आप हम पर कृपा करें 'यह भी मेरा एक दास है" ऐसी हमारे पति आप भावना करें ॥ १५ ॥

श्री शङ्कर जी का ऐसा वचन सुनकर श्रीराम ने कहा--

हे वत्स ! तुमको जो वरदान मांगना हो सो मांगो मैं वरदान देने वाला हूं । चाहे जैसा दुर्लभ सहज में न प्राप्त हो ऐसा वरदान मांगोगे तो भी हे सुन्दर व्रत वाले ! मैं तुम्हें वरदान दूँगा ॥ १६ ॥ इस स्तवराज का पाठ कर जो मनुष्य नित्य मेरी स्तुति करेगा उसके हृदय में मैं सदा निवास करूँगा इसमें कुछ भी संशय नहीं है ॥ १७ ॥ वह ब्रह्म हत्यादिक

Scanned by CamScanner

पापों से भी मुक्त हो जायगा असिद्ध पुरुष का कार्य सिद्ध हो जायगा ब्रह्म निर्वाण पदवी प्राप्त करेगा ॥ १८ ॥ विद्या हीन को विद्या प्राप्त होगी मेरे मन्त्राक्षरों का चिन्तवन करने से युद्ध में विजय प्राप्त होगी शत्रुओं को जीत लेगा । दुर्गति वाले को सद्गति प्राप्त होगी भ्रष्ट तथा तर्क वितर्क करने वाले मूढ़ मनुष्य का भी कल्याण होगा इसके पढ़ने से सुनने से पाठ करने से मेरे धाम में आनन्द करेगा ॥ १९-२० ॥

श्री शङ्कर जी ने कहा--

हे श्रीराम ! मेरी यही प्रार्थना है, यदि आपको प्रिय लगे तो श्रवण करिये, आप की हमारे पर कृपा है तो हे देव देवेश ! अपने चरणों की भक्ति प्रदान करिये ।

"यह महासुन्दरी तन्त्र के परम रहस्यान्तर्गत श्रीसीतारामस्तवराज सम्पूर्ण हुआ ।"

(❀❀❀)